Radhika (India)

काश ऐसी दुनिया होती जहां हम हर दिन हमारे दोस्तों के साथ काम करतें। या फिर ऐसी दुनिया जहां हम जिन-जिनके साथ काम करें, वो सब हमारे दोस्त बन जाए। लेकिन, “काश” क्यों? ऐसी दुनिया तो है, और उसका नाम है bab.la!

हमे यह लिखने को कहा गया है कि हमारा अनुभव यहां हाम्बुर्ग में कैसे रहा। इसका जवाब दो चार शब्द में नहीं दिया जा सकता। सच कहूँ तो दो चार पन्ने भी काफ़ी नहीं। मेरे लिये एक बहुत अनोखा सा अनुभव रहा है। यहां के लोग, उनका जीना का ढंग, उनका बोलने का तरीका, सब मेरे लिये नया है। घर तो हमेशा घर ही रहेगा, मगर इन तीन महिनों में हाम्बुर्ग दूसरे घर जैसा बन गया है।

❖

यहां काम करते मुझे बहुत ही मज़ा आयी। हमेशा नसीब इतना अच्छा नहीं होता कि इन लोगों जैसे साथी मिलें। bab.la में काम पर आना मतलब दोस्तों को मिलने जाना जैसे रहा है। ऐसा ज़िंदगी में कितनी बार मौका मिलेगा, जहां आपके काम करने के कमरे में नौ अलग दोशों के बारह अलग लोग हो?

bab.la का यह दफ़तर एक संयुक्त राष्ट्र सभा के सम्मेलन जैसा दिखता है। नौ देशों के (यानि कि नौ भाषाओं के) प्रतिनिधी बैठकर अपना काम करते हैं।

❖

अब तीन महिने यहां रहने के बाद जाने का वक़्त आ गया है। आने से पहले मुझ लग रहा था, तीन मिहिने मतलब साल का एक चोथा भाग, किता लम्बा वक़्त! पता नहीं कैसे पर ये तीन महिने तो एक चुटकी में निकल गये!

मैं सोचती थी कि काम का खतम होना मतलब खुशी की बात है, ना? लेकिन आज जब मेरा यहां bab.la से जाने का वक़्त आ गया है, अब मुझे लगता है कि शायद यह रिहाई नहीं बल्कि जुदाई है!

bab.la की लड़कियाँ!

bab.la के हर गुरुवार के“ऑफ़िस लंच” का एक – स्वीडिश खाना!

यहां दूसरे मंज़िल पर bab.la!